ऐसा भी होता है

अनिल कुमार

यूं तो मौसम कई होते हैं। परंतु बच्चों से पूछा जाए कि सबसे अच्छा मौसम कौन सा है, तो अधिकांश का कहना होगा–रेनी सीजन, यानी बारिश। चलिए, इस बार आपको बरसात से जुड़ी कुछ खास जानकारियां देते हैं।

वर्षा वन

वर्षा वन पृथ्वी के जीवन संतुलन को बनाए रखने में सहायक हैं। ये वे इलाके होते हैं, जहां औसत से ज्यादा बारिश होती है। कई वर्षा वन तो इतने घने होते हैं कि सूरज की रोशनी धरती तक नहीं पहुंच पाती। वर्षा वनों का महत्व ऐसे समझा जा सकता है कि दुनिया के करीब चालीस प्रतिशत जीव-जंतु और पेड़-पौधे वर्षा वन की ही देन हैं। माना जाता है कि इसके अनछुए और अंधेरे हिस्सों में आज भी करोड़ों प्रकार के पौधे, जीव और बूटियां बहुत से ऐसे इनसानी कबीले भी हैं, जिनके विषय में हमें आज भी कुछ नहीं पता। यह दुनिया का सबसे बड़ा दवाखाना या दवा बनाने के लिए रॉ मैटेरियल का सप्लायर है। वर्षा वन पूरे विश्व में फैले हैं। जीव और प्रकृति वैज्ञानिक अंधेरे, सीलन से भरे, पर प्राकृतिक खजानों के भंडार, वर्षा वनों से कुछ न कुछ नया खोज लाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालते रहते हैं।

वर्षा जल का संरक्षण

आम तौर पर लोग बरसाती पानी का महत्त्व नहीं समझते। इसीलिए भगवान की इस देन की सब उपेक्षा करते हैं और सारा पानी जमीन में या नदियों में चला जाता है। फिर नदियों का पानी सागर में मिलकर बरबाद हो जाता है। इसीलिए अधिकांश जगहों पर पानी की किल्लत से बचने के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस तकनीक से वर्षा जल को एक स्टोरेज सिस्टम के जरिए भविष्य में उपयोग के लिए बचाकर रख लिया जाता है। पानी को बर्बाद होने से बचाने के लिए अब तो नई इमारतों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। राजस्थान के कई इलाकों में सदियों से रेन वाटर हार्वेस्टिंग की परंपरा है। जैसलमेर का करीब एक मील चौड़े आगौर वाले तालाब घड़सीसर का आगौर 120 वर्ग मील क्षेत्र में फैला हुआ है। इसे जैसलमेर के राजा

इंद्रधनुष

कई बार जब बारिश हो रही होती है, तो इसके पीछे से धूप निकल आती है। उस समय सूर्य की तेज रोशनी एक खास कोण से जब वर्षा की बूंद पर पड़ती है, तो कई बार विभिन्न रंगों की छटा दिखाई देती है। इसे ही इंद्रधनुष कहते हैं। इसका घुमाव धनुष की तरह होता है इसीलिए इसे इंद्रधनुष नाम दिया गया। इसमें कुल सात रंग दिखाई देते हैं। सबसे ऊपरी रंग लाल होता है, तो भीतरी और आखिरी रंग वायलेट है। इसके बाकी रंग संतरी, पीला, हरा, नीला और इंडिगो हैं। इंद्रधनुष केवल बरसात के दौरान ही बने, यह जरूरी नहीं है। फव्वारों, झरनों आदि के सामने भी ये खूब दिखाई देते हैं। इंद्रधनुष को धार्मिक ग्रंथों में भी खूब जगह मिली है।

तेजाबी बारिश

कई बार पानी के साथ-साथ तेजाब भी बरसता है। ऐसी बारिश सबके लिए नुकसानदेह है। दरअसल वातावरण में छोड़े गए अमोनियम, कार्बन, नाइट्रोजन और सल्फर मिलकर तेजाब बनाते हैं और वर्षा बूंदों के साथ जब ये बरसते हैं, तो पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं के साथ-साथ पृथ्वी के वातावरण के लिए भी घातक होते हैं।

रावल घड़सी ने सन 1335 में बनवाया था। यह रेन वाटर हार्वेस्टिंग का सर्वोत्तम उदाहरण है। आज भी यह गरमियों में जरूरतमंदों को भरपूर पानी देता है।

बादल का फटना

सफेद-सफेद रुई जैसे बादल पहाड़ों पर जाकर देखो, तो कितने सुंदर लगते हैं। पर जब ये बादल बरसने के बदले फटते हैं, तो तबाही मच जाती है। दरअसल बादल का फटना सामान्य बात नहीं है। आम तौर पर बहुत ऊंचाई के बादल ही वातावरण के दबाव में आकर फटते हैं। फटने का मतलब ऐसे समझो कि नहाते समय मग से अपने ऊपर पानी डालने के बदले पूरी टंकी का पानी एक साथ शरीर पर गिरना। ऐसी स्थिति आम तौर पर बिजली और तूफान के साथ ही आती है। अतः इसका परिणाम बड़ा भयंकर निकलता है। ऐसी वर्षा दो-चार घंटों की नहीं, बल्कि कुछ मिनटों की होती है। पर इस दौरान शायद कई दिनों का पानी एक साथ बरस जाता है।

बादलों से छेड़छाड़

बरसात एक प्राकृतिक नियम है। इससे छेड़छाड़ ठीक नहीं। चीन ने सबसे पहले 2006 में बीजिंग ओलंपिक के दौरान बरसात को दूर रखने के लिए गैस का प्रयोग किया था। उन्होंने जबरन बादल को उसके स्थान से हटाकर कहीं और बरसने को मजबूर किया था। लोगों को लगा कि यह तरीका क्रांतिकारी है और कम बारिश वाले स्थानों पर इसका अच्छा उपयोग होगा। वहां के वैज्ञानिकों ने जबरदस्ती बर्फबारी भी करवाई। पर इसका परिणाम भयंकर हुआ। इस साल चीन में मौसम से की गई जोर-जबरदस्ती के कारण भयंकर बर्फबारी हुई और बर्फबारी वाले इलाके के लोग बरबाद हो गए।

बरसना मछलियों और मेढक का

कई बार ऐसा होता है कि जैसे ही बारिश शुरू हुई, तो साथ में आसमान से मछलियां या मेढक बरसने लगते हैं। कुछ लोग इसे अपशकुन मानते हैं, तो कुछ भगवान की देन। पर होता यह है कि पानी के वाष्पीकरण प्रक्रिया के दौरान मेढकों और मछलियों के अंडे भी बादल बनने की प्रक्रिया का भाग बन जाते हैं। वहीं उनका विकास होता है और जब बादल से बूंदें बरसती हैं, तो साथ में ये भी बरस जाते हैं। ऐसा भारत ही नहीं, बेल्जियम और हॉलैंड जैसे देशों में भी होता है।

प्लास्टिक के तले वाला तालाब

कई इलाके ऐसे होते हैं, जहां कम जल बरसता है। ऐसी जगहों पर पानी को बचाकर रखना बड़ा मुश्किल काम है। इसके लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं। ऐसा ही एक तरीका है प्लास्टिक के तले वाले तालाब बनाने का। इसमें किसी भी बड़े मैदान में गहरी खुदाई की जाती है। फिर उसमें एक खास किस्म की प्लास्टिक शीट बिछाई जाती है। फिर उसमें डेढ़-दो इंच मिट्टी की तह जमाई जाती है। चारों तरफ किनारे पर ऊपर तक शीट लाकर उनपर मिट्टी डालकर घास उगा देते हैं, ताकि शीट उड़ न पाए और मिट्टी से पानी का मेल न हो। फिर इस तालाब में वर्षा जल को विभिन्न रास्तों से लाकर इकट्ठा कर लिया जाता है।